EHJ-5-HI

क्या ऐतिहासी का यीशु विश्वास का यीशु है? प्रोग्राम – 5

अनाऊंसर: ऐतिहासिक यीशु की खोज आज विख्यात और पढाई के संसार में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हो गया है, और इसने नैशनल मैगज़ीन से बहुत ध्यान आकर्षित किया, जैसे की टाइम, न्यूज़ वीक और यु एस न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट/ साथ ही मिडिया ने जीजस सेमीनार के इन वाक्यों कि बहुत ज्यादा महत्व दिया है, खुद को चुननेवाले लिबरल ग्रुप ने नए नियम की वुद्धिमत्ता को बहुत कम प्रतिशत दिए हैं/

आज हम ऐतिहासिक यीशु के विवादों पर आधारित सवालों के जवाब देंगे, और यीशु के बारे में बहुत ऐतिहासिक सच्चाई हैं ये बात दिखाएंगे, संसार के और नए नियम को छोड़ दूसरे स्रोतों से, जो ये दिखाते हैं कि इतिहास का यीशु मसीही विश्वास का ही यीशु है/

मेरे मेहमान हैं, संसार के महान फिलोसोफर डॉ. गैरी हैबरमास, ये द हिस्टोरिकल जीजस किताब के लेखक हैं, इन्होने म इशिग्न स्टेट यूनिवर्सिटी से पी एच डी की हैं, और दूसरी डॉक्टरेट डिग्री इम्मानुएल कॉलेज, ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लैंड से की हैं, डॉ. हैबरमास लिबर्टी यूनिवर्सिटी के फिलोसोफी और थियोलोजी के डिपार्टमेंट के चेअरमैन हैं, और इन्होने यीशु के जीवन पर 100 से भी ज्यादा लेख लिखे हैं, जो बहुत से बुद्धिमत्ता के जरनल में आएं हैं/

हमारे साथ द जॉन एन्करबर्ग शो के इस एडिशन में जुड़ जाए और और सीखे कि क्यों यीशु ऐतिहासिक समय में सबसे ज्यादा देखा जानेवाला व्यक्ति है/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्वागत है, जानते हैं एक झूठी विचारधारा है, जिसे बहुत कम लोगों का समूह जिसे जीजस सेमीनार कहते हैं वो बढाते जा रहा है, कि बहुत ही कम ऐतिहासिक सबूत है जो यीशु के बारे में पारंपरिक विश्वास के बारे में बताते हैं, लेकिन पिछले हफ्ते डॉ. गैरी हैबरमास ने यीशु के जीवन के बारे में 12 ऐतिहासिक सबूत बताए जिसे लगभग सब दोष निकालनेवाले विद्वान् स्वीकार करते हैं, और ये तथ्य दिखाते हैं कि जीजस सेमिनार गलत हैं, आज हम उन तथ्यों के महत्व को देखनेवाले हैं, मेरे मेहमान डॉ. गैरी हैबरमास इन तथ्यों का सामना कर चुके हैं जब वो मिशीगन स्टेट में पीएच डी के विद्यार्थी थे, इन तथ्यों ने उन्हें खुद दोष निकालनेवाले होने से हटाकर विश्वासी बना दिया, और वो इन तथ्यों के बने रहने के बारे में कहते हैं, मैं चाहता हूँ कि इसे सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: पिछले प्रोग्राम में हमने लगभग आधे दरजन तथ्य देखें हैं, लेकिन मैंने कहा है कि इस साहित्य के आधार पर, हम बहस कर सकते हैं कि यीशु मरा और वो अपनी मृत्यु के बाद प्रकट हुआ/

बस व्यक्तिगत नोट है, मैं सोचता हूँ ये तथ्य मेरे जीवन में महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मैंने 10 साल दोष निकालनेवाले के रूप में बिताए हैं, मैं विश्वासियों के साथ बहस करता था, सच में किसी भी धार्मिक व्यक्ति से बहस करता था, चाहे यहोवा साक्षी हो, या मोमेन, लेकिन कईबार ये विश्वासी होते थे, मैं उनकी तथ्यों की बुनियाद का इनकार करते आया, मैं कहता था कि आपके पास डेटा नही है, ये सुसमाचार में हैं, इसके लिए डेटा नही है, मैंने स्टेट यूनिवर्सिटी में धर्म की पढाई की थी, और मैं इस तरह सोचता था, और ये चार तथ्य मुझ से ये कहते हैं, हम अपनी सूचि घटा सकते हैं, यदि आप चाहे, और विश्वासीयों के पास अधिकार हैं कि सुसमाचार पर विश्वास करें, लेकिन जो इसक इनकार करते हैं, हमें बस छोटी बुनियाद चाहिए, और तथ्य कि दिखाए कि नैचरलिस्टिक थेयरी असफल रही है, और मसीह मुर्दों में से जी उठा है, मैं सोचता हूँ कि ये आधे दरजन तथ्य यही करते हैं, सामान्य रूप में हम यही करते हैं/

हम यहाँ इस तरीके से खेल रहे हैं, जो दोष निकालनेवाले करते हैं, जिस तरह से वो सोचते हैं, और कहते हैं कि यहाँ तकी कि बाइबल से पढ़ना ये कुछ नही लेकिन प्रचीन किताब पढना है, मतलब ये इससे कम क्या हो सकता है, ये प्राचीन हैं, इसमें पन्ने हैं, पन्नों पर शब्द हैं, ये बहुत बुनियादी हैं, और बाइबल के साथ ऐसे करते हैं, कि वो प्राचीन साहित्य है, फिर भी हम ये मुख्य या कम से कम तथ्य मैं कहता हूँ, केवल इस आधार पर, हम नैचरलिस्टिक थेयरी को दूर कर सकते हैं, और बहस कर सकते हैं कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब आगे हम 12 तथ्यों का परिक्षण करेंगे, पहले क्या सच में यीशु क्रूस पर मरा? जानते हैं कुछ धर्म के लोग कहते हैं कि यीशु क्रूस पर नही मरा, और कुछ हुआ, और फिर नैचरलिस्टिक विद्वान हैं जो कहते हैं कि यीशु क्रूस पर नही मरा, वो केवल बेहोश हुआ या अधमारा हुआ, खैर, इन थेयरी में समस्या ये है कि यीशु की मृत्यु के बारे में ऐतिहासिक सच्चाई ये है, जो ऐसे अनुवाद होने नही देगी, डॉ. गैरी हैबरमास बताते हैं कि क्यों, सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब ये सबसे पहला तथ्य इस सूचि में, ये है कि यीशु मरा, आज क्यों विद्वान यीशु की मृत्यु के बारे में सवाल उठाते हैं, उदाहरण के लिए जीजस सेमीनार के संस्थापक जिन्होंने इस विषय पर लिखा और क्यों जॉन डोमनिक क्रोस्सन, और मार्क्स बोर्ग कहते हैं कि ये बात कि यीशु मरा ये उसके जीवन में सबसे निश्चित बात है, क्योंकि डेटा इतना मजबूत है/

अब उनमे से कुछ क्या हैं? सबसे पहले कृसिकरण के द्वारा मृत्यु तो दम घुटने से मृत्यु है, जब कोई क्रूस पर होता है और शरीर का वजन निचे खिचता है, और ये फेफड़ों के आस-पास के दूसरे मांसपेशी पर प्रभाव डालता है, तो ऐसा समय आता है जब वजन इसे निचे खींचता है, श्वास ले

सकते हैं लेकिन श्वास छोड़ना बहुत मुश्किल होता है, और फिर ऐसे समय आता है कि मानो लकवा हो गया है, और फिर श्वास नही छोड़ सकते हैं/

1950 में पश्चिम जर्मनी में एक प्रयोग किया गया, जहाँ पुरुष वोलेन्टीअर से 2 बाय 4 से बंधे रहने के लिए कहा गया, उन पुरुषों में बस 12 मिनट में ही होश खो दिया, अब क्रूस पर उपर उठ सकते हैं, कील का दर्द होगा लेकिन उपर जा सकते हैं, उपर जाने पर फेफड़ों के मसल्स को खोल सकते हैं, लेकिन उन्हें निचे खोचने पर, वहां ज्यादा समय नही रह सकते हैं, तो निचे आते हैं और क्रूस पर निचे के स्थर में, दम घुटता है, रोमी लोगों के पास इसके लिए कोई दवाई नही थी, जब कोई क्रूस पर काफी समय तक निचे ही लटके रहे,कहिए कि 30 मिनट तक, तो वो मर गया/

दूसरी बात, कि कहा गया कि यीशु के सीने पर मारा गया, और खून और पानी बाहर आया/ कोई कहेगा कि ये युहन्ना के सुसमाचार में है, ये नही मान सकते हैं/

चलिए मैं आपको बताऊ, पुराने कृसिकरण के लेखों में, बहुत से लेख हैं, कूप डे ग्रा के, मारनेवाले हमला जो कृसिकरण के अंत में किया जाता है, कि सब खत्म करें, हम देखते हैं कि ये सब खत्म करने के लिए किसी की खोपड़ी कुचली गई, और किसी को तीर से मारा गया, और 2 केस हैं जो युहन्ना के सुसमाचार के बाहर के हैं, जहाँ उसे मरा हुआ जाने के लिए भाला मारा गया, और साथ ही ये है जिसे (लैटिन में) क्रुसी फ्रेगरियम कहते हैं, याने कोनी को तोडना है, याने वो खुद को उठा न सके, और इन केस में मारनेवाले ये कहते हैं, वो जीवित नही बचेंगे/

याने कारण नंबर एक, क्रूस पर निचे हैं तो मर गए, दम घुटने से/

नम्बर 2, मारा जाना, यीशु की केस में उसकी पसली में भाला मारा, एक जरनल याने अमेरिकन मेडिकल असोसिएशन ने लगभग 15 साल पहले, हमने बताया गया कि यीशु की मृत्यु दम घुटने से हुई, रिसर्च करनेवाले कहते और साथ ही क्लिनिक के पैथलोजिस्ट कहते हैं, वो कहते हैं कि भाला उसके दिल तक गया, और पानी, उसके दिल के भीतरी भाग से आया,जिसे पेरीकार्डियम कहते हैं, याने यीशु मर गया था, यदि नही मरता तो भाले से मर जाता/

तीसरा कारण, चलिए थोडा अलग होते हैं शायद आप सोच रहे होगे, आपने अब तक क्या बताया, लेकिन तीसरी बात को सीने से खून निकलना कहते हैं, ये विख्यात मेडिकल बात है, यदि भाला उपरी थोरासिक एरिया में मारा गया, और वो फेफड़ों में जाता है, एक जीवितव्यक्ति, यदि वो जीवित है, तो चूसने का आवाज़ उस छेद से आता है, इसे देखिए, इसके लिए मेडिकल डॉक्टर होने की जरूरत नही कि यदि ये आवाज़ आए तो वो जीवित हैं, आज मेरे विद्यार्थी ने मुझ से कहा कि उन्होंने एक हिरन का शिकार किया, और जब उसके पास गए, सीने को देखा तो ये आवाज़ आ रही थी, वो उसे फिर मारनेवाला था, और आवाज़ रुक गई, जानवर मर गया/

याने सीने पर मारता और ये दिल तक नही जाता, तो सीने से चूसनेवाली आवाज़ से जानते, याने, ये कुछ कारण है कि विश्वास करें कि कृसिकरण मारनेवाला था, दम घुटना, दिल का जख्म, और यदि ये दिल तक नही गया, तो चूसने की आवाज़ आती/

अब ये सब कहने के बाद, इन में से कोई भी ऐतिहासिक कारण नही है, मुख्य कारण कि यीशु की मृत्यु झूठी मृत्यु नही है, 1835 में, एक जर्मन लिबरल, डेविड स्ट्रॉस ने यीशु का जीवन लिखा, और वो इतने लिबरल थे कि उन्हें अपने लिबरल यूनिवर्सिटी से निकाला गया, और कहा कहा कि सिखाना बन्द कर दे, उसके जीवन के कारण नही लेकिन यीशु के बारे में बहुत विचारधारा रखने के कारण, लेकिन यहाँ ये कहता है,ये विख्यात लेख,ये उन पर दोष लगाता है कि यीशु नही मरा, खैर ये 1835 तक ये विख्यात थेयरी थी, कि यीशु नही मरा/

उसने कहा कि स्वून थेयरी में यही समस्या है, ये तो विरोध की बात है, यीशु को क्रूस पर मरना था, लेकिन नही मरा कोई बात नही, कब्र में मरना था, मरा नही चिंता की बात नही/

वो पत्थर लुड़का नही सकता था, कई लोग लगते थे कि पत्थर को हटाकर उसे उपर ले जाए और कब्र से हटाए, वो कमजोर था, कोई बात नही, उसने पत्थर दूर किया, चला कितनी दूर? चौथाई मिल, रुकावटों में, चेलों के पास, ऐसे पैरों से जिस में किल थे/

और स्ट्रॉस सोचते हैं कि ये समस्याएँ थी? ये बड़ी समस्या नही थी, ये कहना मुख्य समस्या है कि यीशु नही मरा/ जहाँ चेले थे, वो उस द्वार पर आता है, और जब वो द्वार पर आते हैं, तो वो कैसे दिखता था, वो कैसे दिखता था? वो दुबला था, पसीना आ रहा था, पसली का जख्म फिर से खुल गया, वो झुक गया, उसने अपने बाल भी नही धोए थे, पसीना और खून से बाल जम गए थे, लंगडाते हुए कहता है, दोस्तों, मैंने तुम से कहा था कि मैं मुर्दों में से जी उठूंगा/

स्ट्रॉस कहते हैं कि यहाँ जो हुआ देखिए, वो जीवित हैं, हाँ, जी उठा, नही, वो यही करते हैं, पतरस उसे अपनी कुर्सी दो, एन्ड्रू जाकर पानी लाना, युहन्ना डॉक्टर को बुलाओ, वो प्रभु का धन्यवाद करते हैं, वो चंगा हो गया, या चंगा हो रहा है,या जीवित है, लेकिन वो नही कहेंगे कि प्रभु का धन्यवाद कि ये जी उठा है, तो ये अपेक्षा न करे कि फिलिपुस एक कोने में, कह रहा होगा जैसे नया नियम कहता है, ओ देखो, किसी दिन मेरे पास भी इसी के जैसे पुनरुत्थान की देह होगी, नही धन्यवाद, धन्यवाद, मेरे पास जो देह है, मैं रखूंगा, यीशु अपनी देह रख लो/

अब ये स्ट्रॉस का मुद्दा है, स्वून यही कहते हैं, और हम इसे चुक जाते हैं, जीवित है, हाँ, जी उठा, नही/ समस्या क्या है? यदि चेलों ने ये विश्वास नही किया कि वो जी उठा है, तो नए नियम के चर्च के लिए कोई कारण नही है/ शुरू के प्रचार के लिए कोई कारण नही, उन्हें विश्वास करना था कि ये जी उठा है, स्वून थेयरी हमें ये नही देती है/

सारांश : दम घुटना, दिल, सीना, स्ट्रॉस ने बताई दशा, और भी बहुत समस्या हैं, पौलुस के साथ क्या करें, याकूब के साथ क्या करें? उन्हें कैसे सहमत कर लोगों के साथ लाए? सारांश निश्चित ही ये है कि यीशु क्रूस पर मरा, रोमी कृसिकरण के कारण/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अब बहुत समय पहले मैंने डॉ. हैबरमास से ह्यू शॉनफील्ड की किताब द पास ओवर प्लाट के बारे में कहने के लिए कह, जो कहती है कि यीशु को क्रूस पर चढाते समय ड्रग्स दिए थे, उसने मरने का दिखावा किया, डॉ. हैबरमास का ये प्रतिउत्तर है/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब क्या होता है जब हम इसे इसी किताब के साथ उपयोग करते हैं, जैसे 1965 की बेस्ट सेलर, द पास ओवर प्लाट, लेखक बताते हैं कि यीशु क्रूस पर नही मरा, खैर (बहुत से) लोगों को ये याद नही लेकिन उन्होंने कहा, ये (केवल) सुझाब है, मैं नही कहता कि ये सच में हुआ है, उन्होंने कहा यदि यीशु क्रूस पर नही मरा तो क्या?

याने वो दम घुटने पर भी रहा, वो दिल की समस्या पर भी सही रहा, सीने पर लगने पर भी रहा, स्ट्रॉस ने कही परिस्थिति पर भी जीवित रहा, याने स्वून थेयरी द पास ओवर प्लाट, इसे दोष निकालनेवाले अनदेखा करने लगे, सच में विद्वानों ने बड़ी सूचि बनाई, कहा, इसे हमारे काम के रूप में न ले, क्योंकि बात तो ये है कि इस बात को इस तरह दूर नही कर सकते/

चलिए मैं आपको ये बताता हूँ, 1835 में डेविड स्ट्रॉस की बात के बाद, अल्बर्ट श्वेजगर की विख्यात किताब, द क्वेस्ट ऑफ़ हिटोरिक्ल जीजस, उसके बाद 1840 के बाद कोई विद्वान् स्वून की थेयरी नही मानते हैं, ऐतिहासिक रूप में कहे तो स्ट्रॉस की बातें ही, यदि आप गौर करें, स्ट्रॉस की परिस्थिति ने स्वून थेयरी को खत्म किया/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आप अभी हमारे साथ जुड़े हैं, डॉ. गैरी हैबरमास यीशु के बारे में 12 ऐतिहासिक तथ्य बता रहे हैं, जिसे आज सब दोष निकालनेवाले विद्वान् स्वीकार करते हैं, इन 12 तथ्यों का महत्व तो ये है, वो यीशु के बारे में पारंपारिक मसीही विश्वास को बनाते हैं, और वो जीजस सेमीनार को दूर करते हैं, और वो उन सारे नैचरलिस्टिक विवरण को दूर करते हैं, जो यीशु के जी उठने के बारे में बताते हैं, अब अगला तथ्य जो हम देखेंगे,वो है यीशु गाढ़ा गया, ये इतना महत्वपूर्ण क्यों है? सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: अब विश्वासियों के लिए, जिन के लिए यीशु की मृत्यु और जी उठना महत्वपूर्ण है, जैसे पौलुस कहता है कि पहला महत्व है,तो फिर अगला क्या है? यीशु क्रूस पर मरा, यहाँ तक कि तल्मुद बताते हैं, फिर उसका गाढ़ा जाना बताया है, अब ये बहुत से लोगों का सवाल नही है, मतलब, ये होता है, जो लोग मरते हैं, गाढे जाते हैं, तो फिर गाढे जाने के लिए क्या कहे, जैसे हम नए नियम में सीखते हैं/

सबसे पहले, आज दोष निकालनेवाले सुसमाचार से बढकर पौलुस पर चर्चा करते हैं, लेकिन चलिए कहते हैं कि चारों सुसमाचार पर सहमत हैं, कि जिस कब्र में यीशु को दफनाया गया, वो खली थी/ ठीक है? दोष निकालनेवाले कहते हैं, मुझे सुसमाचार पसंद नही है

लेकिन चलिए देखते हैं, नबंर दो, दोष निकालनेवालों को सुसमाचार पसंद नही, ये सुसमाचार को दूर नही करता, नंबर दो जरूरत ये है, कि कही ओर गाढे जाने के सबूत चाहिए, ये मुख्य है, ये सबूत कि वो और कही गाढ़ा गया, ये साबित नही होता, जानते हैं क्यों? शुरू के कोई सबूत

नही कि वो और कही गाढ़ा गया, शायद कहे ये या (शायद) वो, चलिए अविश्वासी ये यही सवाल पूछते हैं, ये डेटा जो विश्वासीयों से पूछा जाता है, ये डेटा कहाँ है कि वो नही गाढ़ा गया, और सुसमाचार ये कहे/

नंबर तीन, बहुत से लोगों ने ये बात बनाई कि युसुफ और निकुदिमुस, इनके नाम गाढे जाने की कहानी में मुश्किल हैं, जब तक कि वो गाढ़नेवाले व्यक्ति न हो, यदि वो लोग नही थे तो इन नामों को बिच में क्यों लाए, ये बताता है कि वो सही कहानी बता रहे हैं, ये जानते थे/

साथ ही, हमारे पास शुरू के कुछ टेक्स्ट हैं, हमने इसे पहले बताया है क्रीड, पहला कुरिन्थियो 15, याद है, ट्रिपल होटी, और, और, और की बहस, पौलुस कहता है कि पवित्रशास्त्र के अनुसार वो हमारे पापों के लिए मरा, और वो गाढ़ा गया, और वो जी उठा, और प्रकट हुआ, अब इस क्रम को देखिए, ये शुरू की बात जो पौलुस की नही, ये पौलुस के पहले से थी, यदि कोई मरा, गाढ़ा गया, जी उठा,और प्रकट हुआ, मजबूत बात है कि जो निचे गया था वो बाहर आया है, पौलुस कहता है, कि गाढ़ा जाना हुआ, और वो उससे आगे जाता और खाली कब्र के बारे में कहता है, लेकिन पहला कुरिन्थियो 15 का वचन कहता है, गाढ़ा गया और यहाँ फिर हम शुरू के सबूत देखते हैं/

प्रेरित 13:29 पर एक और अच्छी बहस है, क्यों? क्योंकि जैसे मैंने पहले कहा कि कुछ दोष निकालनेवाले कहते हैं कि प्रेरित 13 में क्रीड के कुछ वाक्य हैं, ये मिली हुई थियोलोजी है, और यहाँ प्रेरित 13:29 में, इस वचन में हमें बताया कि वो गाढ़ा गया, याने यहाँ टेक्स्ट की दो बहस हैं/ यहाँ सुसमाचार हैं, युसुफ और निकुदिमुस के विरुद्ध कोई सबूत नही, पहला कुरिन्थियो 15 है, प्रेरित 13 है, और अंत में, सबसे अंत में यरूशलेम में गाढे जाने का दावा करते, यदि उसे वहां नही दफनाया है तो/ क्योंकि पुरे संसार में वो जगह थी जो इनकार करते थे, वो देह को ले जाते और कहते यहाँ नही यहाँ पर है/ ये दावा करने के लिए यरूशलेम अंतिम जगह होती, याने आधा दरजन बहस हैं कि विश्वास करें कि सुसमाचार गाढे जाने के लिए कहता है, गाढे जाने के डेटा के बारे में, ये सच में सही है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, अगली सच्चाई को हम देखना चाहते हैं कि कब्र खाली थी, ये भही इतिहास की सच्चाई है, इससे ये सवाल उठता है, देह का क्या हुआ? यीशु का क्या हुआ? डॉ. हैबरमास बताते हैं/

डॉ. गैरी हैबरमास: ठीक है, चलिए अगले कदम में चलते हैं, वो मरा, वो गाढ़ा गया, उस कब्र में क्या हुआ? खैर, विश्वासी कहते हैं कि वो जी उठा, लेकिन इसके बिच याने गाढे जाने और जी उठने में, हमें बताया कि कब्र खली हुई, यीशु उस में से निकल गया, क्या ये विश्वास करने का कारण है? फिर से, मैं पहली बात कहना चाहता हूँ, सब चारों सुसमाचार में खाली कब्र बताई गई, और दोष निकालनेवाले आते हैं, मैंने बताया था कि मुझे सुसमाचार पसंद नही हैं,

सुसमाचार की खाली कब्र की कहानी की सहमती में हमारे पास क्या है? चलिए मैं आपको तीन बड़े सबूत देता हूँ/

एक, कि खाली कब्र के शुरू की गवाह स्त्रियाँ थी/ ये क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि यदि आप कहानी बना रहे हैं, याद है सोमवार सुबह की मानसिकता, यदि कहानी बना रहे हैं और शुरू के विश्वासियों को अपने कहने के लिए अपने शब्द दे रहे हैं, तो ध्यान में रखना है कि स्त्रियों को गवाह के रूप में उपयोग न करें, क्यों? पहली सदी में उन्हें कोर्ट में गवाही देने की अनुमति नही थी, उन पर विश्वास नही था कि वो सच्चाई बताएगी, हमें ये बताया गया है, वो गवाही नही दे सकते थे, तो क्यों ऐसे लोगों को ले जो गवाही नही दे सकते, याने छोटे बच्चों को अपना मुख्य गवाह बनाने जैसे है, तो क्यों कहें ये यहाँ हैं, कब्र खाली है, स्त्रियों ने उसे देखा, ये सच्चाई है किस स्त्रियों ने पहले खाली कब्र देखी, ठीक है?

दूसरा कारण, यहूदी विश्वास करते थे कि कब्र खाली थी, अब ये इतिहास की सच्चाई है, ये इतिहास का तरीका है, ये कहता है कि जब दोष निकालनेवाले कोई बात मानते हैं, तो ये सही होगा, यदि आप किसी को नही सह सकते और कहते हैं कि ये ये और वो हैं, ये और वो हैं/ लेकिन ये साहसी व्यक्ति हैं, साबित होता है कि ये साहसी व्यक्ति हैं, और चेलों ने कहा कि कब्र खाली है, यदि चेलों ने देह चुराई होती, और कोई भी याने 200 साल तक किसी ने इस थेयरी पर दोष नही निकाला, क्योंकि झूठे लोग शहीद नही होते, हम चेलों के बदलाव और सच्चे विश्वास को नही बता सकते हैं, कि उन्होंने देह चुराकर झूठ कहा, याकूब के लिए विवरण नही है, पौलुस के लिए विवरण नही है, याने ये विवरण बहुत अर्थ नही बनाता है, तो फिर क्या बाकी रहा है? यदि चेलों ने देह चुराई होती, यहूदीयों के अनुसार, ये थेयरी काम नही करती है, ये ऐसे दिखाई दे रहा था कि यहूदी अगुवे कुछ बना रहे थे, दूसरी बात, वो विवरण दे रहे थे, कि इस सच्चाई को बताए, कि देह चली गई है/

तीसरी बहस, हमारे पास शुरू का टेक्स्ट है जो मैंने कुछ समय पहले बताया है, पहला कुरिन्थियो 15, यहाँ पौलुस का क्रम है कि हमारे पापों के लिए मरा, गाढ़ा गया, जी उठा, प्रकट हुआ, यदि वही व्यक्ति मरता, गाढ़ा जाता, जी उठता और प्रकट होता, तो क्या होगा? देह वहां नही है, जो निचे गया वो उपर उठा, यहाँ मजबूत वाक्य है पहला कुरिन्थियो 15 से, गाढे जाने पर जोर दिया है, और ये अगले कदम की मजबूत बात है कि कब्र खाली थी/

हम यहाँ दूसरी बातों को देखते हैं, मैं फिर कहूँ यरूशलेम, गाढे जाने के लिए, यरूशलेम खाली कब्र का दावा करने के लिए आखरी जगह होती, क्योंकि लोग कहते, देखो कब्र खाली नही है, और वो उन्हें वहां ले जा सकते थे/

प्रेरित 13:29, ये शुरू के क्रीड का वचन है, कहता है कि वो गाढ़ा गया और कब्र खाली थी, याने यहाँ आधा दर्जन बहस हैं, खासकर मुझे पसंद है, स्त्रियों की गवाही, और यहूदियों ने खाली

कब्र को माना, और पौलुस की क्रीड, पहला कुरिन्थियो 15 से, ये सच में मुश्किल बहस है कि कहे, जानते हैं, सुसमाचार कहता है तो ये सच है, इस खाली कब्र के बारे में/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: आज हमने यीशु के बारे में तीन ऐतिहासिक तथ्यों को देखा है, पहला कि वो कृसिकरण के कारण मरा, दूसरा, कि वो गाढ़ा गया, और तीसरा कि उसकी कब्र खाली थी, अब अलगे हफ्ते हम इस बात को देखेंगे कि यीशु के सारे चेलों ने विश्वास किया कि वो उन पर प्रकट हुआ था, उसको क्रूस पर मरकर गाढे जाने के बाद, ये सच्चाई क्या बताती है, समूह का भ्रम, या दर्शन, या यीशु सच में उन पर प्रकट हुआ था, हम अगले हफ्ते इन सवालों का जवाब देखेंगे, अब डॉ. हैबरमास आज की बातों का सारांश बताते हैं, और ये आपके लिए महत्वपूर्ण है/ सुनिए/

डॉ. गैरी हैबरमास: हम इससे क्या बता रहे हैं, दोष निकालनेवाले शायद आपको दरजन भर तथ्य देंगे, खैर ये ठीक है, मुझे केवल 12 चाहिए, जो सोचते हैं कि 12 बहुत हैं, विश्वास कीजिए, इसे देखनेवाले लोगों के लिए ये बहुत ही कम हैं, मैं आपको 4 बताता हूँ, मैंने कहा कि केवल ये आधार, हमें दिखाता है कि जो मरा वही जी उठा है, इन 2 घटनाओं के बिच, गाढ़ा जाना और खाली कब्र में, लगभग आधा दरजन कारण हैं कि दोनों पर विश्वास करें/

जिसके बारे में हमने अब तक कुछ नही कहा है, वो है प्रकट होना, और ये तो अब तक का सबसे मुख्य सबूत है, और कारण यही है, क्योंकि दोष निकालनेवाले ये बात मानने को तैयार हैं कि चलों ने सच में सोचा कि उन्होंने यीशु को देखा है, और ये तो पुनरुत्थान का सबसे उत्तम सबूत है/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाे एप

"घ्द्धठ्ठन्न् द्यद्द ठ्ठड़ड़ढ्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मदव्द्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्द्दध्.द्दद्धढ़

@JAshow.org

क्द्दद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋच्ड्क्ष्